Roll No.

कुल प्रश्नों की संख्या : 14]
Total No. of Questions : 14]

[कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 08
[Total No. of Printed Pages : 08

L-242010/810-C

हायर सेकण्डरी परीक्षा / Higher Secondary Examination

विषय : हिन्दी
Subject : Hindi

समय : 3 घण्टे]
Time : 3 Hours]

[पूर्णांक : 80
[Maximum Marks : 80

नोट :- सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।

सामान्य निर्देश :-

(i) प्रश्न पत्र के सभी प्रश्नों को तीन खण्डों 'क', 'ख' और 'ग' में विभक्त किया गया है।

(ii) खण्ड 'क' में 2 प्रश्न हैं जिसमें 16 अंक निर्धारित हैं।

(iii) खण्ड 'ख' में 5 प्रश्न हैं जिसके 4 प्रश्नों में विकल्प दिये गये हैं। इस खण्ड में कुल 20 अंक निर्धारित हैं।

(iv) खण्ड 'ग' के 'आरोह' भाग में 32 अंक निर्धारित हैं।

(v) खण्ड 'ग' के 'वितान' भाग में 12 अंक निर्धारित हैं।

https://www.cgboardonline.com

खण्ड - 'क'

प्रश्न-1 अधोलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर इस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

"यूँ तो कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है, जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशल का प्रयोग होता है, परन्तु विद्वानों ने हृदय की गहराई से या सच्चे मन से मानवीय भावनाओं को व्यक्त करने के लिए की गई सुन्दर प्रस्तुतिको ही कला कहा है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी अंत:करण की सुन्दर प्रस्तुति को ही कला कहा है।

विचारकों का मानना है कि, कला में मानव मन की संवेदना को उभारने, प्रवृत्तियों को ढालने, चिन्तन को सकारात्मक बनाने, अभिरूचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता है। मनोरंजन, सौंदर्य, प्रवाह, उल्लास जैसे न जाने कितने तत्त्वों से कला सम्पृक्त है। सकारात्मकता से, जीवन मूल्यों से समृध्द होने की वजह से कला को जीवन का सौंदर्य भी कहा गया है।

सामान्य मानव के मन में रहने वाली विभिन्न तरह की संकीर्णता यथा जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र, आयु, लिंग, रंग-रूप, पद, बल, धन, आदि के अहंकार व्यक्ति को पशुत्व की ओर ले जाते हैं, जबकि कला व्यक्ति की मानसिकता को विस्तार देती है; क्षुद्र स्वार्थ, द्वेष आदि से मुक्त कर मनुष्य को उद्दात बनाते हुए "वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना से जोड़ती है।

भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्त्व - सत्य, अहिंसा, करुणा, समन्वय और समभाव हैं, जिन्हें प्राचीन काल से लेकर आज तक की कलाओं में देखा जा सकता है। भारतीय कला के विस्तार के साथ ही भारतीय संस्कृति

https://www.cgboardonline.com

के विस्तार की एक वजह यह भी है। ऐसा भी कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति के विस्तार में कला का महत्त्वपूर्ण योगदान है। भारतीय कला-संस्कृति का विस्तार, वैविध्य और गहनता विश्व को चमत्कृत करती है। कला में सन्निहित संस्कृति और संस्कृति के मूल तत्त्व मानवीय मूल्य को विश्व सम्मान की दृष्टि से देखते हैं।"

(i) विद्वानों के अनुसार कला क्या है? [2]

(ii) 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना क्या है? [2]

(iii) लेखक के अनुसार संस्कृति का मूल तत्त्व क्या है? [2]

(iv) "मनोरंजन" का संधि विच्छेद एवं "महत्त्वपूर्ण" का समास विग्रह कीजिए। [1+1=2]

(v) "अभिरूचि" शब्द में उपसर्ग क्या है? 'मानसिकता' शब्द से मूल शब्द व प्रत्यय अलग-अलग कीजिए। [1+1=2]

(vi) जीवन का सौंदर्य किसे कहा गया है? [1]

(vii) प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। [1]

प्रश्न-2 अधोलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर, इस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

"निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है।
मंद, सुगंध पवन हर लेता श्रम है।
षड ऋतुओं का विविध दृश्य युक्त अद्भुत क्रम है
हरियाली का फर्श नहीं मख़मल से कम है।
शुचि सुधा सींचता रात में तुझपर चंद्र-प्रकाश हैं।
हे मातृभूमि! दिन में तरणि करता तमका नाश है।।
पाकर तुझमें सभी सुखों को हमने भोगा,
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?

https://www.cgboardonline.com

तेरी ही यह देह तुझी से बनी हुई है,
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है,
फिर अंत समय तू ही इसे अचल देख अपनायेगी,
हे मातृभूमि! यह अंत में तुझमें ही मिल जाएगी।

(i) उपर्युक्त काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। [1]

(ii) सूर्य का क्या महत्त्व बताया गया है? [1]

(iii) सुरस – सार से कवि का क्या आशय है? [1]

(iv) प्रत्युपकार का संधि-विच्छेद कीजिए। [1]

खण्ड – 'ख'

प्रश्न-3 निम्ननिलिखित में से **किसी एक** शीर्षक पर लगभग 200 शब्दों में निबंध लिखिए - [1+3+1 =5]

https://www.cgboardonline.com

(क) अनेकता में एकता - भारत की विशेषता।

(ख) चन्द्रयान - 3 की सफलता।

(ग) वन एवं जैव-विविधता संरक्षण।

(घ) वायु प्रदूषण कारण-निदान।

प्रश्न-4 प्लास्टिक थैलियों के उत्पादन एवं प्रयोग पर रोक लगाने के लिए पर्यावरण मंत्री को पत्र लिखिए। [1+3+1 =5]

अथवा

परीक्षावधि में डी. जे. का प्रयोग बंद कराने हेतु अपने जिले के कलेक्टर को नागरिकों की ओर से आवेदन लिखिए।

प्रश्न-5 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

(क) जनसंचार के कोई दो कार्य लिखिए। [1]

(ख) हिन्दी का पहला समाचार पत्र कहाँ से प्रकाशित हुआ? [1]

https://www.cgboardonline.com

(ग) इण्ट्रो क्या है? लिखिए। [1]

(घ) विशेष लेखन के दो प्रकार बताइये। [1]

प्रश्न-6 नाटक में संकलन त्रय का क्या महत्त्व है? [3]

अथवा

कविता की रचना में शब्द चयन का क्या महत्त्व है?

प्रश्न-7 समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड शैली क्या है? समझाइए। [3]

अथवा

"नशे से नाश की ओर" - पर आलेख लिखिए।

खण्ड – 'ग' – आरोह

प्रश्न-8 निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिए -

"तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दु:ख की छाया-
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया-
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल!"

https://www.cgboardonline.com

(i) प्रस्तुत काव्यांश के कवि का नाम एवं कविता का शीर्षक बताइए। [2]

(ii) संसार का हृदय कैसा हो गया है? [2]

(iii) विप्लव के बादल का क्या अर्थ है? [2]

प्रश्न-9 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर, इस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं सांसों के दो तार लिए फिरता हूँ!
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

(i) प्रस्तुत काव्यांश का भाव सौंदर्य लिखिए। [2]

(ii) प्रस्तुत काव्यांश में रूपक व अनुप्रास अलंकार छाँटकर लिखिए। [2]

प्रश्न-10 (i) "रस का अक्षयपात्र" से कवि ने रचनाकर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है? [3]

(ii) बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है' कैसे? [3]

https://www.cgboardonline.com

प्रश्न-11 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर, इससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

"कालिदास सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर तक पहुँच सकते थे। दु:ख हो कि सुख, वे अपना भाव-रस उस अनासक्त कृपीवल की भाँति खींच लेते थे जो निर्दलित ईक्षुदण्ड से रस निकाल लेता है। कालिदास महान थे, क्योंकि वे अनासक्त रह सके थे। कुछ इसी श्रेणी की अनासक्ति आधुनिक हिन्दी कवि सुमित्रानन्दन पन्त में है। कविवर रवीन्द्रनाथ में यह अनासक्ति थी। एक जगह उन्होंने लिखा- "राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही अभ्रभेदी क्यों न हो, उसकी शिल्पकला कितनी ही सुन्दर क्यों न हो, वह यह नहीं कहता कि हममें आकर ही सारा रास्ता समाप्त हो गया। असल गंतव्य स्थान उसे अतिक्रम करने के बाद ही है, यही बताना उसका कर्तव्य है।" फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अंगुली है। वह इशारा है।"

(i) कविवर रवीन्द्रनाथ ने राजोद्यान के बारे में क्या कहा? [2]

(ii) कालिदास सुन्दरता का अवलोकन किस प्रकार करते थे? [2]

(iii) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक एवं पाठ का शीर्षक लिखिए। [2]

प्रश्न-12 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

(i) 'धाक-धिना, तिरकट-तिना' ध्वन्यात्मक शब्द का लुट्टन के लिए क्या अर्थ था? [1]

(ii) आदर्श समाज की स्थापना में डॉ. अम्बेडकर के विचारों की सार्थकता पर अपने विचार लिखिए। [3]

(iii) "पैसों में कितनी शक्ति है", बाजार दर्शन पाठ के आधार पर लिखिए। [3]

https://www.cgboardonline.com

(iv) "हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है।" 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर लिखिए। [3]

खण्ड – 'ग' – वितान

प्रश्न-13 यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों? लिखिए। [4]

अथवा

श्री सौंदलगेकर अध्यापक की किन विशेषताओं ने आनंदा के मन में कविताओं के प्रति रूचि जगाई? लिखिए।

प्रश्न-14 (क) "यह साठ लाख लोगों की तरफ से बोलनेवाली एक आवाज है। एक ऐसी आवाज, जो किसी संत या कवि की नहीं, बल्कि एक साधारण लड़की की है।" इल्या इहरनबर्ग की इस टिप्पणी के संदर्भ में ऐन फ्रैंक की डायरी के आधार पर अपने विचार लिखिए। [4]

अथवा

"टूटे-फूटे खण्डहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समय के भी दस्तावेज होते हैं-" स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'जूझ' कहानी आधुनिक किशोर-किशोरियों को किन जीवन मूल्यों की प्रेरणा दे सकती है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। [4]

अथवा

'सिल्वर वेडिंग' पाठ के आधार पर उन जीवन मूल्यों पर विचार कीजिए जो यशोधर बाबू को किशन दा से उत्तराधिकार में मिले थे?

****

https://www.cgboardonline.com
Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

https://www.cgboardonline.com